वर्ष 2017–18 बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम

मिशन 100 शेखावाटी

मॉडल पेपर एवं प्रश्न बैंक

कक्षा–10

विषय–हिंदी

BY SN SIR-9828932858

सर्वश्रेष्ठ संकलन, सर्वश्रेष्ठ सफलता हेतु

संरक्षक	मार्गदर्शक	सह मार्गदर्शक
नथमल डिडेल (आई.ए.एस)	डॉ. महेंद्र चौधरी	राजकुमार शर्मा
निदेशक, मा.शि.रा.बीकानेर	उप निदेशक, मा.शि.	जिला शि.अ.मा.झुंझुनूं
	चूरू संभाग	

लेखन संकलन व निर्माण

सत्यनारायण, व्याख्याता रा.आ.उ.मा.विद्यालय

बुडाना, झुंझुनूं

महेश जाँगिड़, व्याख्याता	श्रीमती सुधीरा, व्याख्याता	श्रीमती कमलेश, व्या.
रा.आ.उ.मा.वि.	रा.उ.मा.वि.	रा.आ.उ.मा.वि.
हनुमानपुरा, झुंझुनूं	इस्लामपुर, झुंझुनूं	माण्डासी, झुंझुनूं

कार्यालय :– उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राजस्थान)

महत्वपूर्ण निर्देश

- रोल नंबर अंकों व शब्दों दोनों में लिखें।
- दिन, दिनांक, कक्षा, विषय सही लिखें।
- स्वच्छ, शुद्ध और संक्षिप्त लिखें।
- उत्तर क्रमांक हाशिए पर ही लिखें।
- उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें।
- हाशिए पर अन्य कोई नंबर न डालें।
- अनुच्छेद बनाकर लिखें।
- उत्तर बिंदुओं के रूप में लिखें।
- **मुख्य पंक्तियों को ब्लेक पैन से रेखांकित करें।**
- एक ही उत्तर को दो जगह न लिखें।
- एक ही उत्तर को दो टुकड़ों में न लिखें।
- गलत उत्तर को तिरछी लाईनों से काटें।
- पी.टी.ओ./कृ.प.उ. लिखे।
- पेपर में लिखें निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- 0.6 पॉइंट के पैन से लिखें।
- परीक्षा से पहले पैन की ट्रायल लें।
- दो उत्तरों के बीच एक या दो पंक्ति खाली छोड़े।
- पृष्ठ की नीचे की पंक्ति में कुछ न लिखें।
- उत्तर पुस्तिका के दोनों तरफ सलवट डालकर मार्जिन बनायें।
- उत्तर सीमा–15 से 17 पेज। एक पंक्ति में 5 से 7 शब्द।

BY SN SIR-9828932858

खंड–04, कुल प्रश्न–29, पूर्णांक–80,
समय 3 घंटे 15 मिनट

खंड–01

अपठित गद्यांश और पद्यांश (प्रश्न संख्या 1 से 6) अंक भार–8 (गद्यांश 4 अंक व पद्यांश 4 अंक)

– अपठित गद्यांश या पद्यांश से प्रश्न पूछने का उद्देश्य यह है कि क्या विद्यार्थी हिंदी भाषा में लिखे किसी गद्य या पद्य को पढ़कर उसको समझ सकता है।

हल करने की प्रक्रिया

1. **वाचन–** मूल पाठ का दो या तीन बार वाचन कर केंद्रीय भाव तक पहुंचने की कोशिश करें।
2. **रेखांकन–** मूल पाठ का दूसरी या तीसरी बार वाचन करते समय महत्वपूर्ण वाक्यों, वाक्यांशों एवं शब्दों को रेखांकित कर देना चाहिए जो पाठ के केंद्रीय भाव से अधिक निकटता से जुड़े हों।
3. **शीर्षक–** मूल पाठ के केन्द्रीय भाव से संबंधित रेखांकित सामग्री में से संक्षिप्त एवं आकर्षक शीर्षक का चुनाव करना चाहिए। शीर्षक के लिए पाठ के ही किसी अत्यंत महत्वपूर्ण शब्द या शब्दों को चुना जा सकता है या नवीन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।
4. **अन्य प्रश्नों के उत्तर**

- मूल पाठ के केन्द्रीय भाव को व्यक्त करने वाले शब्दों का अर्थ ग्रहण करना चाहिए।
- कठिन शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का प्रयोग किया जाये।
- लोकोक्ति या मुहावरों को अर्थ सहित लिखा जाना चाहिए।

– उचित विराग चिह्नों का प्रयोग करते हुए सरल भाषा में उत्तर लिखें।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत में गुरु शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में ही थोड़ा बहुत ही सही, पाया जाता है। रामकृष्ण बरसों योग्य शिष्य पाने के लिए प्रार्थना करते रहे। उनके जैसे व्यक्ति को भी उत्तम शिष्य के लिए रो–रोकर प्रार्थना करनी पड़ी थी। इसी से समझा जा सकता है कि एक गुरु के लिए उत्तम शिष्य कितना महत्वपूर्ण होता है। संतानहीन रहना उन्हें दुख नहीं देता पर बगैर शिष्य के रहने के लिए वे एकदम तैयार नहीं होते। इस संबंध में भगवान ईसा का एक कथन सदा स्मरणीय है। उन्होंने कहा था–"मेरे अनुयायी लोग मुझसे कहीं अधिक महान हैं और उनकी जूतियाँ होने की भी योग्यता मुझ में नहीं है।" यही बात है कि गांधी जी बनने की क्षमता जिनमें है उन्हें गांधी जी अच्छे लगते हैं और वे ही उनके पीछे चलते भी हैं। विवेकानंद की रचना सिर्फ उन्हें पसंद आयेगी जिनमें विवेकानंद बनने की अद्‌भुत शक्ति निहित है।

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न–1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न–2. कौन लोग विवेकानंद की रचना को पसंद करते हैं?

प्रश्न–3 ईसा मसीह ने अपने शिष्यों के बारे में क्या कहा?

उत्तर–1. शीर्षक–गुरु शिष्य संबंध

उत्तर–2. विवेकानंद की रचना सिर्फ उन्हें पसंद आयेगी जिनमें विवेकानंद बनने की अद्‌भुत शक्ति निहित है।

उत्तर–3. ईसा मसीह ने अपने शिष्यों के बारे में कहा था–"मेरे अनुयायी लोग मुझसे कहीं अधिक महान हैं और उनकी जूतियाँ होने की भी योग्यता मुझ में नहीं है।"

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मानव जीवन का सर्वतोन्मुखी विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की शक्तियाँ अंतर्निहित रहती हैं, शिक्षा इन्हीं शक्तियों का उद्‌घाटन करती है। मानवीय व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने का कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न होता है। सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक मनुष्य ने जो प्रगति की है, उसका सर्वाधिक श्रेय मनुष्य की ज्ञान–चेतना को ही दिया जा सकता है। मनुष्य में ज्ञान–चेतना का उदय शिक्षा द्वारा ही होता है। बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन पशु तुल्य होता है। शिक्षा ही अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान का दिव्य आलोक प्रदान करती है।

प्रश्न–1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न–2. शिक्षा का उद्देश्य किसे बताया गया है और क्यों?

प्रश्न–3 मनुष्य के जीवन में शिक्षा का क्या महत्व है?

उत्तर–1. शीर्षक–शिक्षा का महत्व।

उत्तर–2. मानव जीवन का सर्वतोन्मुखी विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की शक्तियाँ अंतर्निहित रहती हैं, शिक्षा इन्हीं शक्तियों का उद्‌घाटन करती है।

उत्तर–3. मनुष्य में ज्ञान–चेतना का उदय शिक्षा द्वारा ही होता है। बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन पशु तुल्य होता है। शिक्षा ही अज्ञान रूपी अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान का दिव्य आलोक प्रदान करती है।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

देश की सर्वांगीण उन्नति एवं विकास के लिए देशवासियों में स्वदेश प्रेम का होना परम आवश्यक है। जिस देश के नागरिकों में देश हित एवं राष्ट्र कल्याण की भावना रहती है, वह देश उन्नतिशील होता है। देश प्रेम के पवित्र भाव से मंडित व्यक्ति देशवासियों की हित साधना में, देशोद्धार में तथा राष्ट्रीय प्रगति में अपना जीवन तक न्योछावर कर देता है। हम अपने देश के इतिहास पर दृष्टि पात

करें तो ऐसे देश भक्तों की लंबी परंपरा मिलती है, जिन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण करके स्वदेश प्रेम का अद्‌भुत परिचय दिया। महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, सरदार भगतसिंह, महारानी लक्ष्मी बाई, तिलक व महात्मा गांधी आदि सहस्रों देश भक्तों के नाम इस दृष्टि से लिए जाते हैं। हमें अपने देश प्रेम के इतिहास से देश प्रेम की एक गौरव पूर्ण परंपरा मिलती है और उससे देश हितार्थ सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रश्न–1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न–2. कौनसा देश उन्नतिशील होता है?

प्रश्न–3 हमें देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा कहाँ से मिलती है?

BY SN SIR-9828932858

उत्तर–1. शीर्षक–स्वदेश प्रेम।

उत्तर–2. जिस देश के नागरिकों में देश हित एवं राष्ट्र कल्याण की भावना रहती है, वह देश उन्नतिशील होता है।

उत्तर–3. हमें अपने देश प्रेम के इतिहास से देश प्रेम की एक गौरव पूर्ण परंपरा मिलती है और उससे देश हितार्थ सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का विघटन चहुँओर दिखाई दे रहा है। विलास और भौतिकता के मद में भ्रांत लोग बेहताशा धनोपार्जन की अंधी दौड़ में शामिल हो गये हैं। आज का मानव स्वार्थपरता में इस तरह आकंठ डूब चुका है कि उसे उचित–अनुचित का भान नहीं हो पा रहा है। आज के अभिभावक धनोपार्जन एवं भौतिकता के साधन जुटाने में इतने लीन हैं कि उनके वात्सल्य का स्रोत ही उनके लाडलों के लिए सूख गया है। आज का बालक एकाकीपन की भरपाई या तो घर में टी.वी व मोबाइल से करता है या कुसंगति में पड़कर जीवन का नाश करता है। समाज के इस संक्रमण काल में छात्र किन जीवन मूल्यों को सीख पायेगा, यह कहना नितांत कठिन है। जब जब समाज पथ भ्रष्ट हुआ है तब तब युग सर्जक की भूमिका का निर्वाह शिक्षकों ने बखूबी किया है। वर्तमान स्थिति में जीवन मूल्यों के संस्थापन का भार शिक्षकों के ऊपर है क्योंकि आज का परिवार बालक के लिए सद्‌गुणों की पाठशाला जैसी संस्था नहीं रह गया है जहाँ से बालक एक संतुलित व्यक्तित्व की शिक्षा पा सके।

प्रश्न–1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न–2. आज के अभिभावकों के वात्सल्य का स्रोत क्यों सूख गया है?

प्रश्न–3 वर्तमान समय में जीवन मूल्यों के संस्थापन का दायित्व किन पर है?

उत्तर–1. शीर्षक–नैतिक मूल्यों का विघटन और शिक्षकों का दायित्व।

उत्तर–2. आज के अभिभावक धनोपार्जन एवं भौतिकता के साधन जुटाने में इतने लीन हैं कि उनके वात्सल्य का स्रोत ही उनके लाडलों के लिए सूख गया है।

उत्तर–3. वर्तमान स्थिति में जीवन मूल्यों के संस्थापन का भार शिक्षकों के ऊपर है।

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे,
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।
कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम,
साधना से सिहरकर मुड़ते रहे तुम।

अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा।
आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

प्रश्न–1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
प्रश्न–2. कवि लोगों को कहाँ नहीं जाने देना चाहता है?
प्रश्न–3 उपर्युक्त पद्यांश का मूल प्रतिपाद्य/भाव लिखिए।

उत्तर–1. शीर्षक–अब न गहरी नींद में तुम सो सकोग।
उत्तर–2. कवि लोगों को निराशा रूपी गहरे पाताल में नहीं जाने देना चाहता है।
उत्तर–3. कवि लोगों को निराशा से निकल कर नई आशाओं के साथ कल्पना लोक को छोड़कर यथार्थ जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

BY SN SIR-9828932858

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उठे राष्ट्र तेरे कंधों पर बढ़े प्रगति के प्रांगण में।
पृथ्वी को रख दिया उठाकर, तूने नभ के आँगन में।।
तेरे प्राणों के ज्वारों पर लहराते हैं देश सभी।
चाहे जिसे इधर कर दे तू, चाहे जिसे उधर क्षण में।।
देश–धर्म–मर्यादा की रक्षा का तुम व्रत ले लो।
बढ़े चलो, तुम बढ़े चलो, हे युवक! तुम अब बढ़े चलो।

प्रश्न–1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
प्रश्न–2. "पृथ्वी को रख दिया उठाकर तूने नभ के आँगन में।" इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?
प्रश्न–3 उपर्युक्त पद्यांश में युवकों को क्या संदेश दिया है?

उत्तर–1. शीर्षक–नवयुवक।
उत्तर–2. पृथ्वी को आकाश के आँगन में उठाकर रखने का आशय यह है कि युवकों की शक्ति से ही मातृभूमि का विकास और उत्थान होता है।
उत्तर–3. इसमें नवयुवकों को देश–धर्म और मर्यादा की रक्षा का व्रत लेकर आगे बढ़ने का संदेश दिया है।

Choosing Success

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की दिव्य आरती फेरी।।
यह समाधि एक लघु सममाधि है, झाँसी की रानी की।
अन्तिम लीला–स्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।।
यहीं कहीं पर बिखर गई वह, भग्न विजयमाला सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं, है यह स्मृतिशाला सी।।
बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की भस्म यथा सोने से।।
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।।

प्रश्न–1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
प्रश्न–2. वीर का मान कब बढ़ जाता है?
प्रश्न–3 'उसके फूल यहाँ संचित हैं' यहाँ फूल से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–1. शीर्षक–झाँसी की रानी की समाधि।
उत्तर–2. युद्ध भूमि में शत्रु से लड़ते हुए बलिदान होने पर वीर का मान बढ़ जाता है।

उत्तर–3. यहाँ फूल से तात्पर्य है–चिता के शांत हो जाने के बाद उससे चुनी हुई अस्थियाँ या लक्ष्मी बाई के अवशेष।

खंड–02

निबंध लेखन– प्रश्न संख्या –7 अंक भार–8

– चार विकल्प– चार निबंधों में से एक करना है।

निबंध –

भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
अथवा
BY SN SIR 9828932858
योग की उपादेयता
अथवा
योग भगाये रोग

1. प्रस्तावना
2. भारतीय संस्कृति और योग
3. योग का महत्व
4. विश्व में योग की बढ़ती ख्याति
5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना :–

योग का सीधा अर्थ है जोड़। अतः अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना ही योग है। महादेव देशाई के अनुसार–"शरीर मन और आत्मा की समग्र शक्तियों को परमात्मा में संयोजित करना ही योग है।" संक्षेप में मन को किसी एक में स्थिर करना, आत्मा और परमात्मा का मिलन करना ही योग है।

योग के अनेक प्रकार हैं यथा–कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्तियोग, हठयोग आदि। आसन योग का एक अंग हैं इसलिए इन्हें योगासन कहा जाता है। योगासनों के द्वारा हम अपने रोगों को दूर कर आरोग्य प्राप्त कर सकते हैं।

2. भारतीय संस्कृति और योग :–

भारतीय संस्कृति ने सदैव मानव मात्र के हित के लिए कामना की है–'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया'। हमारे ऋषि मुनियों और मनीषियों ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए अथक प्रयास किये। सुखी जीवन के लिए तन और मन दोनों का ही स्वस्थ रहना आवश्यक है। महर्षि पतंजलि ने 'योगशास्त्र' शास्त्र की रचना की। भारती की इस प्राचीन विद्या का अनुयायी आज सारा विश्व बन गया है। **इसलिए 21 जून 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। विश्व के 192 देशों में इस दिन योग का भव्य आयोजन हुआ।** अतः यह कहना उचित है कि योग भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार है, जिससे आज विश्व का हर मानव लाभान्वित हो रहा है।

3. योग का महत्व :–

योग का महत्व आज सर्वविदित है। योग एक जीवन पद्धति है जिस प्रकार खाना, पीना, सोना, मनोरंजन करना जीवन के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार स्वस्थ व निरोग रहने के लिए योग प्रत्येक व्यक्ति के लिए परम आवश्यक है। योग में व्यक्ति को निरोग, स्वस्थ व सक्रिय बनाये रखने की क्षमता है। योग करने से सारा शरीर कुंदन के समान पवित्र और गंगाजल के समान पवित्र हो जाता है। इसीलिए कहा गया है कि–'योग भगाये रोग'। योग मानसिक तनाव व थकान को दूर करता है। कैंसर

और मधुमेह जैसे असाध्य रोगों के इलाज में योग कारगर सिद्ध हुआ है। योग से शरीर के सभी अंग सुडोल बनते हैं, शरीर कांतियुक्त होता है। योग करने से मन व मस्तिष्क का विकास होता है। मानव में सहनशक्ति, शालीनता व सहानुभूति जैसे गुणों का विकास होता है।

4. विश्व में योग की बढ़ती ख्याति :—

वर्तमान में योग प्रचार–प्रसार के लिए स्वामी रामदेव द्वारा किए गए प्रयास अतुलनीय हैं। स्वामी रामदेव ने हरिद्वार में 'पतंजलि योगपीठ' की स्थापना की है। स्वामी जी ने देश और विदेश में सैंकड़ों योगाभ्यास शिविर लगाकर लोगों को स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी है। भारत के प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र संघ में दिए अपने भाषण में योग के महत्व को विश्व के समक्ष रखा। फलस्वरूप 21 जून 2015 से प्रतिवर्ष सम्पूर्ण विश्व में योग दिवस मनाये जाने की घोषणा हुई। 21 जून को 192 देशों के नागरिकों ने योगाभ्यास का प्रदर्शन किया। योग की उपादेयता देखते हुए इसे विद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

BY SN SIR-9828932858

5. उपसंहार :—

योग रोग मुक्ति हेतु भारत की प्राचीन पद्धति है। विश्व मानवता को योग विश्व गुरु भारत की देन है। योग की उपादेयता, महत्व और लाभों को देखते हुए विश्व के करोड़ों लोगों ने इसे अपनाया है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि योग को अपनाकर हम श्रेष्ठ इन्सान बन सकते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है–

जान है तो जहान है
योग भगाये रोग

अतः हर व्यक्ति को नियमित रूप से योग करना चाहिए।

स्वच्छ भारत अभियान
अथवा
राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान
अथवा
स्वच्छता अभियान, दशा दिशा और संभावनाएँ

Choosing Success

रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. स्वच्छता की आवश्यकता
3. अभियान की क्रियान्विति
4. दिशा और संभावनाएँ
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना :—

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाकर देश को गुलामी से मुक्त कराया, परंतु 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि में भारत में स्वच्छता की कमी है। इन्हीं बातों का चिंतन और देश की यथार्थ स्थिति देखकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का शुभारंभ 2 अक्टुबर, 2014 को गाँधी जयंती के अवसर पर किया। इस अभियान से सारे देश में सफाई एवं स्वच्छता के प्रति जागरुकता लाने का, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को गन्दगी मुक्त करने का संदेश दिया गया।

2. स्वच्छता की आवश्यकता :—

स्वच्छता का मानव के स्वास्थ्य के साथ निकट का संबंध है। व्यक्तिगत सफाई स्वास्थ्य का प्रथम चरण है। इसी प्रकार सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक स्थानों की सफाई की आवश्यकता होती

है। इसके लिए मलमूत्र व कचरे के उचित निस्तारण, जल स्रोतों को शुद्ध रखने, वायु भूमि का उचित रख–रखाव रखने और मृत पशुओं का निराकरण करना आवश्यक होता है। हम अपने घर को तो साफ रखना चाहते हैं, लेकिन कूड़ा या कचरा घर के बहार फेंक देते हैं। कहीं भी लघु शंका के लिए बैठ जाते हैं। घरों में शौचालय नहीं हैं। देश में लगभग सवा ग्यारह करोड़ शौचालयों की आवश्यकता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में एक लाख छप्पन हजार विद्यालयों में शौचालय नहीं हैं। इस अभियान का उद्देश्य सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना, शौचालयों का निर्माण करवाना, देश को गंदगी से मुक्त करना तथा स्वच्छ जल की व्यवस्था करना है।

3. अभियान की क्रियान्विति :–

BY SN SIR-9828932858

लोग अपने आसपास की सफाई करना छोटा काम समझते हैं। अतः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों की मानसिकता बदलने के लिए, अपने मंत्रीमंडल के साथ हाथ में झाड़ू उठाई और दिल्ली की सड़कों पर सफाई की। इसके बाद संपूर्ण देश में देश में सफाई प्रतिष्ठित लोग, मंत्री, राजनेता व आम जनता इस कार्य में जुट गई। गाँवों में शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि के रूप में बारह हजार रुपये **'स्वच्छ भारत अभियान'** हेतु दिये जाने का निर्णय लिया गया। विद्यालयों में 60 हजार शौचालय बनवाये गये हैं। ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था पर ध्यान दिया जा रहा है। देश में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जो उत्साह देखा गया, उससे लगा कि अब भारत देश में गंदगी का नामोनिशान नहीं होगा।

4. दिशा और संभावनाएँ :–

यदि स्वच्छता रहेगी तो बीमारियों के कारण अनावश्यक आर्थिक बोझ नहीं बढ़ेगा। गंगा यमुना का जल अमृत जैसा पवित्र रह सकेगा और सिंचित कृषि उपजों में भी स्वच्छता बनी रहेगी। स्वच्छता अभियान से देश का पर्यावरण हर दिशा में स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त हो जायेगा। भारत का स्वच्छ बनाने के लिए प्रदेशों की सरकार, बड़े कार्पोरेट सेक्टर और समाज के प्रतिष्ठित लोगों के सहयोग की आवश्यकता है।

5. उपसंहार :–

स्वच्छ भारत अभियान को यदि सच्ची भावना से अपनाया जाये तो इससे आमजन को बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, भारत स्वच्छ हो जायेगा तथा विदेशों में स्वच्छ भारत की छवि उभरेगी, जिससे पर्यटन के क्षेत्र में वृद्धि होगी और उद्योग धंधों को गति मिल सकेगी। स्वच्छता स्वर्ग से भी एक कदम आगे होती है। स्वच्छ भारत का सपना साकार उत्साह और जोश से ही पूरा हो सकता है–

मंजिल उन्हीं को मिल सकती है,
जिनके सपनों में जान होती है।
परों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से बाजी जीती जाती है।

हम भी स्वच्छता अभियान की सफलता को लेकर आशान्वित हैं।

कालेधन पर रोक और देश का विकास
अथवा
कालेधन पर लगाम बनाम देश की अर्थ व्यवस्था
अथवा
मुद्रा परिवर्तन और गरीब का उत्थान

रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. मुद्रा परिवर्तन की आवश्यकता
3. कालेधन पर रोक के लाभ
4. तात्कालिक दशा
5. दिशा और संभावनाएँ
6. उपसंहार

BY SN SIR-9828932858

1. प्रस्तावना

भारतीय संविधान के तीसरे भाग में अनुच्छेद 12 से 35 में मूल अधिकारों का उल्लेख है। प्रारम्भ में भारतीय नागरिकों को 7 मूल अधिकार प्राप्त थे। वर्तमान में 6 मूल अधिकार प्राप्त है। सम्पत्ति के अधिकार को 44 वें संविधान संशोधन 1978 द्वारा कानूनी अधिकार बना दिया गया है। अतः भारतीय नागरिक को अपनी संपति का विवरण हर वर्ष भारत सरकार को देना होता है और उसका आयकर चुकाना होता है लेकिन कुछ धन के कीड़े न तो अपनी पूर्ण आय का विवरण देते हैं और न ही उसका आयकर चुकाते हैं। ऐसा धन काला धन है। ऐसा धने देश के असामाजिक तत्वों के पास इकट्ठा होकर तस्करी, भूमाफियागिरी, कालाबाजारी, आतंकवाद, गंदी राजनीति जैसी प्रवृतियों को जन्म देता है।

2. मुद्रा परिवर्तन की आवश्यकता :—

सरकार की बार—बार चेतावनी और आयकर विभाग की कठोर कार्यवाही के बावजूद भी लोगों ने अपनी संपत्ति का आयकर नहीं चुकाया। इस पर हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक हजार और पांच सौ के नोट पर प्रतिबंध लगाया। इस कदम से काला धन बैंकों में जामा होगा और उसका जुर्माने सहित वसूला गया आयकर देश के सार्वजनिक विकास में सहायक होगा। आन्यथा पुराने नोट केवल कागज के टुकड़े मान बनकर रह जायेंगे। अपनी अर्थ व्यवस्था को सुधारने के लिए 60 वर्ष पहले अमेरिका ने यही कदम उठाया था अतः देश के धन कुबेरों से उनकी अनैतिक कमाई को उजागर करने के लिए मुद्रा परिवर्तन आवश्यक है।

3. कालेधन पर रोक के लाभ :—

सफेद धन से देश की अर्थ व्यवस्था मजबूत होगी। राष्ट्र का बहुमुखी विकास होगा। देश के सभी सार्वजनिक क्षेत्रों में विकास हो सकेगा। देश के सभी उद्योग धंधों में निवेश हो सकेगा। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, गरीबी उन्मूलन, सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के स्तर को सुधारा जा सकेगा। अपने खून पसीने से कमाई करने वाले गरीबों को महंगाई की मार से राहत मिलेगी। इस देश में घोटाले कर अरबों की हजम करने वालों का पैसा जरूरतमंद और गरीब आदमी के काम आने से देश में राम राज्य का सपना साकार होगा।

4. तात्कालिक दशा :—

एक हजार और पांच सौ के नोट के चलन को रोकने से देश में कुछ हल्की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बैंकों के बाहर कतारें लग रहीं हैं, व्यापार मंदी के दौर में हैं, आम आदमी के पास आवश्यक कार्यो हेतु पैसा नहीं है। लेकिन इन सब समस्याओं के बावजूद हमारे प्रधानमंत्री का मुद्रा परिवर्तन का कदम सराहनीय है। कुछ ही दिनों बाद यह संकट खत्म होगा और गरीबी की मार झेल रहे लोगों को सुख चैन से जीने का अवसर मिलेगा।

5. दिशा और संभावनाएँ :—

राष्ट्र के विकास में देश के हर नागरिक का योगदान अपेक्षित होता है। यदि हम अपनी स्वप्रेरणा से अपनी अपनी आय को उजागर कर उसका टैक्स चुकायें तो देश की रगों में फिर से विकास की बाढ़ आ सकेगी। अघोषित संपत्ति को सरकार जब्त करे, बड़े भुगतान चैक से हों तो काले धन संचय पर

लगाम लग सकेगी।

देश में काले धन पर कार्यवाही जारी है लेकिन अपेक्षा है जल्द ही स्विश आदि विदेशी बैंकों में जमा अरबों–खरबों के काले धन पर भी कड़ी कार्यवाही होगी। विदेशों में जमा काला धन अगर देश में आता है तो भारत विश्व का सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था वाला देश होगा। अंदर की सड़ी गली मछलीयों से बगुलों पर आई बाहर की सफेदी कम हो सकेगी और ठठरियों पर मांस चढ सकेगा।

6. उपसंहार :–

अपेक्षा है कि काले धन को सफेद करन की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस मुहिम में देश के हर नागरिक का पूर्ण सहयोग होगा। केवल विरोध के लिए विरोध करने वाले और झूठी हाय तोबा करे वालों से देश नहीं चलता है। ईमानदार, सच्चे और देशभक्त लोगों की मेहनत रंग लायेगी और मजबूत और अखंड भारत का सपना साकार होगा–

BY SN SIR-9828932858

"आँखों में वैभव के सपने
पग पग में तूफानों की गति हो
राष्ट्र भक्ति का ज्वार न रुकता
आये जिस जिस की हिम्मत हो।"

निबंध

कन्या भ्रूणहत्या : एक अभिशाप

अथवा

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

1. प्रस्तावना
2. समाज की मानसिकता
3. लिंगानुपात में बढ़ता अंतर
4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं अभियान का उद्देश्य
5. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं अभियान की सार्थकता
6. उपसंहार

Choosing Success

1. प्रस्तावना

कन्या भ्रूण हत्या एक कुकर्म है
इससे बड़ा न कोई दुष्कर्म है।

भारतीय संस्कृति में नारी को विशेष महत्व दिया गया है। यहाँ नारी को महत्व देते हुए कहा है–'**यत्र नार्यस्तु पूज्येंते रमन्ते तत्र देवता**' अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। नारी के अभाव में सृष्टि के निर्माण का कार्य भी अधूरा रहता है लेकिन वर्तमान समय में अनेक कारणों से नर–नारी भेद सामने आ रहा है जो कन्या भ्रूण हत्या का कारण बनकर लिंगानुपात को बिगाड़ रहा है।

2. समाज की मानसिकता :–

वर्तमान समय में समाज में कुछ रूढ़िवादी सोच के लोग बेटी को पराया धन मानकर उसको पालना–पोसना, पढ़ाना–लिखाना भार मानने लगे हैं। इस कारण कुछ स्वार्थी लोग कन्या को जन्म ही नहीं देना चाहते हैं। गर्भावस्था में ही लिंग परीक्षण करवाकर कन्या जन्म को रोक देते हैं। इसके कारण बालक–बालिका अनुपात में अंतर स्पष्ट दिखाई दे रहा है– **कन्या भ्रूण हत्या एक महापाप है**

इसके अपराधी हम और आप है

3. लिंगानुपात में बढ़ता अंतर :–

आज समाज की संकीर्ण मानसिकता के कारण लिंगानुपात घटने की जगह बढ़ता ही जा रहा है। 1991 में जहाँ एक हजार पुरुषों पर 945 स्त्रियाँ थी, 2011 में बालक–बालिका अनुपात में गिरावट होते हुए यह अनुपात 918 पर पहुँच गया। इस लिंगानुपात के बढ़ते अंतर तथा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उदासीनता को देखकर समाज की ही नहीं, सरकार की भी चिंता बढ़ गई है। इस दिशा में महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें जन्म से ही अधिकार देने के लिए सरकार ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत की है।

BY SN SIR 9828932858

4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का उद्देश्य व सार्थकता :–

पूरे देश में महिलाओं के संरक्षण व उन्हें सशक्त बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी द्वारा हरियाणा के पानिपत में 22 जनवरी, 2015 को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ नाम से एक अभियान प्रारंभ किया। महिला एवं बाल विकास विभाग इस अभियान का मुख्य मंत्रालय बनाया गया। इस अभियान में लिंग परीक्षण से कन्या भ्रूण हत्या को रोकना, बालिकाओं की सुरक्षा, शिक्षा, व्यक्तित्व व पेशेवर विकास आदि का लक्ष्य रखा गया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान बढ़ते लिंगानुपात रोकने एवं उन्हें आगे बढ़ाने की सोच को बल प्रदान करेगा।

6. उपसंहार :–

समाज में लड़की–लड़का समानता के प्रति जागरुकता आनी चाहिए। रूढ़िवादी मानसिकता का परित्याग होना चाहिए। बालिका के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक माहौल विकसित होना चाहिए। आशा है आने वाले समय में बेटियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा–

कन्या है कुदरत का उपहार
मत करो उसका तिरस्कार
जीने का है उसको अधिकार।

दुनियाँ के खुबसूरत शब्द–

"मुबारक हो बेटी हुई है।"

Choosing Success

पत्र लेखन –(प्रश्न संख्या–8) अंक भार–04

– विकल्प सहित : कार्यालयी अथवा व्यवसायिक पत्र
– पत्राचार में दो महत्वपूर्ण व्यक्ति
  1. प्रेषक– जो पत्र भेजता है।
  2. प्रेषिति– जिसे पत्र भेजा जाता है।

कार्यालयी पत्र

– कार्यालयी पत्र दो प्रारूपों मे लिखा जाता है–
  1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र
  2. व्यक्ति द्वारा किसी कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र

1. कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप–

राजस्थान / भारत सरकार
कार्यालय, प्रेषक अधिकारी के पद का नाम,
कार्यालय का नाम एवं पता

पत्र क्रमांक दिनांक

प्रेषिति के पद का नाम,
कार्यालय का नाम एवं पता।

विषय : ....
हेतु।

BY SN SIR-9828932858

महोदय,
उपर्युक्त विषय अंतर्गत निवेदन/लेख है कि..
....
....।
अपेक्षा है/आशा है ....
....।
सादर।
संलग्न : (यदि लगाए गए हों तो)

भवदीय
हस्ताक्षर–क ख ग
(प्रेषक का पद नाम)

पत्र क्रमांक दिनांक
प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु –
1 जिसको प्रतिलिपि भेजनी है उसका पद का नाम, कार्यालय का नाम एवं पता
2 रक्षित पत्रावली।

हस्ताक्षर कखग
पद नाम (कोष्ठक में)

प्रश्न–8. अधिशासी अभियंता, राजस्थान राज्य विद्युत निगम, झुंझुनूं की ओर से एक पत्र पुलिस अधीक्षक झुंझुनूं को लिखिए जिसमें किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा के बारे में अवगत करवाया गया हो।

राजस्थान सरकार
कार्यालय, अधिशासी अभियन्ता,
राजस्थान राज्य विद्युत निगम लिमिटेड, झुन्झुनूं

प.क्र..रा.रा.वि.म./21/13/2017 08 नवंबर, 2017

पुलिस अधीक्षक
झुंझुनूं जिला

झुंझुनूं।

विषय : 28 नवंबर, 2017 को आयोजित किसान रैली के दौरान विद्युत लाइनों की सुरक्षा करने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत हम आपका ध्यान 8 अक्टुबर, 2017 को कलेक्टर के कार्यालय में हुई बैठक की ओर आकृष्ट करना चाहते है जिसमें 28 नवंबर, 2017 को आयोजित किसान रैली से सुरक्षा संबंधी सम्भावित खतरों पर चर्चा की गई थी। उक्त बैठक में किसान रैली के दौरान किसानों का रोष मुखर हो सकता है तथा वे ट्रांसफॉर्मर जलाने आदि की कार्यवाही पर भी उतर सकते है। इस संदर्भ में हमारी ओर से निवेदन है कि इस रैली के दिन आपके नेतृत्व में पुलिस कर्मियों द्वारा कड़ी सुरक्षा हो।

BY SN SIR-9828932858

बिजली की कमी से उपजे किसान आक्रोश की इस विषम परिस्थिति में पुलिस बल का सहयोग देने में आपका विशेष सहयोग रहेगा। इसी अपेक्षा के साथ।

संलग्न : 1. किसान सभा के अध्यक्ष के रैली के संबंध में पत्र की छायाप्रति।

भवदीय

क ख ग

(अधिशासी, अभियन्ता)

प.क्र..रा.रा.वि.म./21/13/2017 08 नवंबर, 2017

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु—

1. उप अधीक्षक, पुलिस खेतड़ीवृत।
2. थाना प्रभारी पुलिस थाना नवलगढ़।
3. रक्षित पत्रावली।

क ख ग

अधिशासी अभियन्ता

प्रश्न—जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा विभाग झुंझुनूं की ओर से एक कार्यालयी पत्र प्रधानाचार्य, राज. आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, बुडाना झुंझुनूं को लिखिए जिसमें कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों के अध्यापन के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित किया गया हो।

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी

माध्यमिक शिक्षा विभाग झुंझुनूं

प.क्र—जि.शि.अ.मा.शि.झुं/21/13/2017 08 नवंबर, 2017

प्रधानाचार्य

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय

बुडाना, झुंझुनूं।

विषय : कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत लेख है कि आपके विद्यालय की कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से अच्छा रहे इस हेतु आप कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषयों में अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित करें। आवश्यकता होने पर सेवानिवृत शिक्षकों अथवा वरिष्ठ प्राध्यापकों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं।

उक्त विषयों में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की सूची तथा आदेश अनुपालना की सूचना इस कार्यालय को भिजवायें।

भवदीय

BY SN SIR-9828932858

क ख ग

जिला शिक्षा अधिकारी

2. व्यक्ति द्वारा कार्यालय को लिखे जाने वाले पत्र (आवेदन–पत्र, प्रार्थना–पत्र, शिकायती–पत्र) का प्रारूप

प्रेषक का नाम

पता।

दिनांक

(सेवा में,/प्रतिष्ठा में,)

प्रेषिति (पानेवाला) के पद का नाम

कार्यालय का नाम, पता

विषय : ....।

महोदय,

उपर्युक्त विषय अंतर्गत निवेदन है कि...।

अपेक्षा है/आशा है ....।

सादर।

संलग्न :– ;पद्ध υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ ;पपद्ध υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ ;पपपद्ध υυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυυ

भवदीय/प्रार्थी

हस्ताक्षर

नाम (कोष्ठक में)

पुनश्च– ....।

हस्ताक्षर

नाम (कोष्ठक में)

प्रश्न–आपका नाम रजनीश है आप वार्ड नंबर तीन झुंझुनूं के रहने वाले हैं। बार–बार बिजली कटौती की समस्याको लेकर अभियंता विद्युत निगम झुंझुनूं को एक पत्र लिखिए।

रजनीश
वार्ड नं–03 झुंझुनूं
20 दिसंबर, 2017

BY SN SIR-9828932858

सेवा में,
श्रीमान अभियंता
विद्युत निगम, झुंझुनूं।

विषय : बार–बार बिजली कटौती न करने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत निवेदन है कि हमारे वार्ड नंबर तीन में बार–बार बिजली कटौती हो रही है। अघोषित बिजली कटौती के कारण बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले छात्र–छात्राओं की पढ़ाई बाधित हो रही है।

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि बोर्ड परीक्षा को ध्यान में रखते हुए बिजली कटौती कम करने की कृपा करें।

सादर।

प्रार्थी

(रजनीश)

Choosing Success

पुनश्चः प्रातः चार बजे से आठ बजे तक बिजली कटौती न करने की कृपा करें।

रजनीश

<u>खंड–03</u>

क्रिया विशेषण (प्रश्न संख्या–09)

प्रश्न–क्रियाविशेषण किसे कहते हैं?

उत्तर–क्रिया की विशेषता बताने वाले पद क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण–वह **धीरे–धीरे** चलता है। (क्रिया विशेषण)

प्रश्न–क्रिया विशेषण के कितने भेद होते हैं?

उत्तर–क्रिया विशेषण के चार भेद हैं :–

1. कालवाचक क्रिया विशेषण

जैसे—वह **कल** आयेगा।

2. स्थानवाचक क्रिया विशेषण

जैसे—वह **ऊपर** बैठा है।

3. परिमाण वाचक विशेषण

जैसे—वह **बहुत** खाता है।

4. रीति वाचक क्रिया विशेषण

जैसे—वह **ध्यानपूर्वक** चलता है।

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न—कालवाचक क्रिया विशेषण को उदाहरण सहित समझाइए?

उत्तर—कालवाचक क्रिया विशेषण :—

वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की **समय से सम्बधित** विशेषता बताते हैं, कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे— अब,जब, तक, आज, कल, आजकल, परसो, हमेशा,

प्रश्न— वह **नित्य** व्यायाम करता है। रेखांकित पद कौनसा क्रिया विशेषण है? परिषाभा लिखिए।

उत्तर—**नित्य**—कालवाचक क्रिया विशेषण

परिभाषा— वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की **समय से सम्बधित** विशेषता बताते हैं, कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

प्रश्न—स्थानवाचक क्रिया विशेषण को उदाहरण सहित समझाइए?

उत्तर—स्थानवाचक क्रिया विशेषण :—

वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की **स्थान से सम्बधित** विशेषता बताते हैं, स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे — यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर,,दायें, बांये, निकट, दूर, समीप, पास, नजदीक, बीच में,

प्रश्न—वह **अंदर** गया। रेखांकित पद कौनसा क्रिया विशेषण है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर—**अंदर**—स्थानवाचक क्रिया विशेषण

परिभाषा :—

वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की **स्थान से सम्बंधित** विशेषता बताते हैं, स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

प्रश्न—परिमाणवाचक क्रिया विशेषण को उदाहरण सहित समझाइए?

उत्तर—परिमाणवाचक क्रिया विशेषण :— वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की **परिमाण(नाप—तोल/मात्रा) से सम्बधित** विशेषता बताते हैं, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे — कितना, जितना, उतना, कम, ज्यादा, थोडा, कुछ, बहुत अधिक।

वाक्य प्रयोग

1. वह **बहुत** खेलता है।(परिमाणवाचक क्रिया विशेषण)

प्रश्न—वह **कम** बोलता है। रेखांकित पद कौनसा क्रिया विशेषण है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर—**कम**—परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

परिभाषाः–

वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की <u>परिमाण(नाप–तोल/मात्रा) से सम्बधित</u> विशेषता बताते हैं, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

प्रश्न–रीतिवाचक क्रिया विशेषण को उदाहरण सहित समझाइए?

उत्तर– रीति वाचक क्रिया विशेषण :– वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की <u>रीति(तरीका) से सम्बधित</u> विशेषता बताते हैं, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे – एसे, वैसे, कैसे, सावधान, से, ध्यानपूर्वक, सपरिवार, लापरवाही, धीरे–धीरे, पैदल, सम्मुच, वास्तव में प्रसन्नपूर्वक न, नहीं, मत, हां,

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न–वह <u>ध्यानपूर्वक</u> चलता है। रेखांकित पद कौनसा क्रिया विशेषण है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर–<u>ध्यानपूर्वक</u>–रीतिवाचक क्रिया विशेषण

परिभाषाः–

वे क्रिया विशेषण जो क्रिया की <u>रीति(तरीका) से सम्बधित</u> विशेषता बताते हैं, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

कारक/काल और वाच्य (प्रश्न संख्या–10) अंक भार–03

समास –(प्रश्न संख्या–11) अंक भार–02

वाक्य शुद्धि (प्रश्न संख्या–12) अंकभार–02

क. खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।

ख. दही खट्टी है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
भोजन बनाने की **व्यवस्था का प्रबंध** करें।	भोजन बनाने की व्यवस्था करें।
भारत **गुलामी की दासता** से मुक्त हुआ	भारत गुलामी से मुक्त हुआ।
वह अपनी **ताकत के बल** पर जीता है।	वह अपने बल पर जीता है।
मैं **मंगलवार के दिन** व्रत रखता हूँ।	मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।
कंश की हत्या कृष्ण ने की।	कंश का वध कृष्ण ने किया।
मैंने इस काम में अशुद्धि की।	मैंने इस काम में भूल की।
दंगे में गोलियों की बाढ़ आ गई।	दंगे में गोलियों की बोछार हो गई।

पिताजी ने **मुझसे** कहा।	पिताजी ने **मुझे** कहा।
मैं **तेरे को** बता दूँगा।	मैं **तुझे** बता दूँगा।
उसने जल्दी घर जाना है।	**उसे** जल्दी घर जाना है।
चाय में **कौन** गिर गया।	चाय में **क्या** गिर गया।
वह लोग जा रहे हैं।	**वे** लोग जा रहे हैं।
यह सबसे सुंदरतम घाटी है।	यह सबसे सुंदर घाटी है।
आज उसके गुप्त रहस्य का राज खुला।	आज उसके रहस्य का राज खुला।
धोबी ने अच्छी चादरें धोई।	धोबी ने चादरें अच्छी धोई।
गहरी समस्या।	गंभीर समस्या।
वह सिलाई और अंग्रेजी पढ़ती है।	वह सिलाई सीखती है और अंग्रेजी पढ़ती है।
वह नहाना माँगता है।	वह नहाना चाहता है।
वह कमीज डालकर सो गया।	वह कमीज पहनकर सो गया।
जो बोला वह कर।	जो कहा वह कर।
वह गालियाँ निकालता रहा।	वह गालियाँ बकता रहा।
मैंने क्या करना है।	मुझे क्या करना है।
वह बस के साथ यात्रा कर रहा है।	वह बस से यात्रा कर रहा है।
तुमका यहाँ क्या काम है।	तुम्हारा यहाँ क्या काम है।
इतर के भीतर सुंगध है।	इतर में सुगंध है।
खेत पर क्या बोया है।	खेत में क्या बोया है।
दही खट्टी है।	दही खट्टा है।
उसके दर्द हो रही है।	उसके दर्द हो रहा है।
बात करना है।	बात करनी है।
बेटी पराये घर का धन होता है।	बेटी पराये घर का धन होता है।
मेरी घड़ी में तीन बजा है।	मेरी घड़ी में तीन बजे हैं।
उसकी आँख से आँसू बह रहा है।	उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।
चारों लड़कों का नाम बताओ।	चारों लड़कों के नाम बताओ।
चार घंटा।	चार घंटे।

BY SN SIR-9828932858

उसका प्राण उड़ गया। उसके प्राण उड़ गये।

प्रश्न–13 मुहावरे अंकभार–02

क. चाँदी का जूता मारना

ख. काम निकालना

पाठ्पुस्तक में प्रयुक्त मुहावरे

BY SN SIR-9828932858

मुहावरा	अर्थ
हाथ लगना	– अचानक प्राप्त होना।
दिन काटने पड़ना	– कठिनाईयों में दिन बिताना।
पारी फेरना	– व्यर्थ बना देना।
मुँह चुराना	– सामने न आना।
जी चुराना	– परिश्रम से बचना।
दिल बैठ जाना	– हिम्मत न रहना या निराश होना।
नानी मर जाना	– भयभीत हो जाना।
आग में कूदना	– साहस दिखाना/साहसी कार्य करना।
छक्के छुड़ा देना	– घबरा देना
गई–बीती समझना	– महत्वहीन समझना
सोलहों आने होना	– पूर्ण होना
नाक कटवा देना	– सम्मान गिरा देना।
नाक ऊँची कराना	– सम्मान बढ़ाना
छत्रछाया पाना	– आश्रय या सुरक्षा पाना
प्राणों की बाजी लगाना	– जीवन को दाँव पर लगाना
खून पसीने से सींचना	– घोर परिश्रम और त्याग करना
प्राण पखेरू उड़ना	– मृत्यु हो जाना
मजा चखाना	– बदला लेना
कच्ची गोलियाँ न खेलना	– सटीक सामना करना
आँखों में समेटना	– अच्छी तरह देखना
कुँआरापन टूटना	– प्रथम बार प्रयोग में आना
हिमाकत करना	– अक्षम्य भूल करना

कलेजा जलना – ईर्ष्या करना

आँखों से गिर जाना – सम्मान न रहना

गुणों को कुंठित बनाना – गुणों का कम होना

सिर खुजलाना – कारण जानना या सोच विचार करना

अनुभवों को निचोड़ना – अनुभवों का सार निकालना

BY SN SIR-9828932858

मन का विद्रोह करना –कोई बात मन को उचित न लगना

निर्मम सत्य उद्घाटित होना – कठोर या पीड़ादायक सच्चाई सामने आना

दृष्टि का उत्सव होना '– आँखों को प्रिय लगना

रेखांकित करना – ध्यान आकर्षित करना

संसार का फंदा काटना – सांसारिक मोह से मुक्त करना

हृदय में जीवित रहना – सदा मन में निवास करना

प्रश्नसूचक दृष्टि से देखना – आँखों में जिज्ञासा या कारण जानने का भाव होना।

Choosing Success

लोकोक्ति का अर्थ –(प्रश्न संख्या–14) अंकभार–01

लोकोक्ति अर्थ

कुछ जल कुछ गंगाजल–मिलावट से काम चलाना

हराम का माल हराम में जाये– पाप की कमाई बच नहीं पाती है

स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष घूँट – एक ही कार्य के परस्पर विरोधी परिणाम मानना

जिस थाली में खाए उसी में छेद करे – उपकार को भुलाना

नींव के पत्थर का महत्व हर कीर्ति स्तंभ से बढ़कर होता है – देश धर्म पर बलिदान होने वालों यश राजा महाराजाओं से ज्यादा होता है।

एक लौ जलकर ही हजारों दीप जला सकती है – एक देश भक्त के बलिदान से ही हजारों लोगों में देश के लिए बलिदान की भावना जागती है।

प्राण पखेरू जाने कब उड़ जाएँ? – मानव जीवन अनिश्चित है/न जाने कब मृत्यु आ जाये

ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से –ईर्ष्या के भाव को मानव मन से निकाल पाना बड़ा कठिन है।

गाय करुणा की कविता है – गाय की आँखों से करुणा का भाव झलकता है।

BY SN SIR-9828932858

निरबैरी निहकामी साध, ता सिर देत बहुत अपराध –किसी से बैर न करने वाले और निष्काम स्वभाव वाले सज्जनों पर लोग दोष लगाया करते हैं।

दादू निंदा ताकौं भावै, जाकै हिरदे राम न आवै – ईश्वर विरोधी को निंदा करना अधिक सुहाता है।

जो ब्रह्माण्डे सोई पिण्डे – परमात्मा ही जीव में आत्मा रूप में विद्यमान है।

एकै मारग तें सब आया – मनुष्य मात्र का जन्म एक ही प्रकार से होता है अतः सभी बराबर हैं।

<u>खंड–04</u>

प्रश्न संख्या–15 सप्रसंग व्याख्या(पद्य से) अंक भार–1+5

विकल्प सहित

प्रश्न संख्या–16 सप्रसंग व्याख्या(गद्य से) अंक भार–1+5

विकल्प सहित

सप्रसंग व्याख्या–

"आज तुम..............जीव तुम्हारी।"

प्रसंग :

1. कवि का नाम
2. रचना का नाम
3. शीर्षक का नाम
4. मूलभाव

व्याख्या :

कवि कहता है कि...........
भाव यह है..........
अर्थात्...........
दूसरे शब्दों में.......

विशेष :

क. मूलवस्तु
ख. रस व प्रकृति
ग. भाषा व उसकी विशेषता
घ. छंद

च. अलंकार
छ. शैली
ज. काव्य गुण(माधुर्य, ओज, प्रसाद)
झ. कठिन शब्दार्थ

प्रश्न संख्या–17. (निबंधात्मक प्रश्न–पद्य से)–विकल्प सहित, उत्तर सीमा–200 शब्द, अंकभार–6

प्रश्न संख्या–18. (निबंधात्मक प्रश्न–गद्य से)–विकल्प सहित उत्तर सीमा–200 शब्द, अंकभार–6

BY SN SIR-9828932858

कैसे हल करें निबंधात्मक प्रश्न

– निबंधात्मक प्रश्न तीन चरणों में हल होता है–मुख्य बिंदु, वर्णन व उदाहरण।

प्रश्न संख्या–19. (लघूतरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

प्रश्न संख्या–20. (लघूतरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

प्रश्न संख्या–21. (लघूतरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

प्रश्न संख्या–22. (लघूतरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

प्रश्न संख्या–23 (लघूरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

प्रश्न संख्या–24 (लघूरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 50 से 60 शब्द, अंकभार–2

नोट–प्रश्न संख्या 23 व 24 सड़क सुरक्षा संबंधित पाठ से रहेंगे।

प्रश्न संख्या–25 (अतिलघूरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–1½

प्रश्न संख्या–26 (अतिलघूरात्मक प्रश्न–पद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–1½

प्रश्न संख्या–27 (अतिलघूरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–1½

प्रश्न संख्या–28 (अतिलघूरात्मक प्रश्न–गद्य से) उत्तर सीमा 30 से 40 शब्द, अंकभार–1½

प्रश्न संख्या–29 (कवि परिचय–पद्य से) उत्तर सीमा –एक पेज अंक भार–3

प्रश्न संख्या–30 (लेखक परिचय–गद्य से) उत्तर सीमा–एक पेज अंक भार–3

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

सूरदास

प्रश्न– गोपियाँ श्रीकृष्ण को चोर क्यों सिद्ध कर रही हैं?

अथवा

उत्तर–कृष्ण ने अपनी तिरछी दृष्टि से गोपियों के सहज विश्वासी मन चुरा लिए हैं। पहले कृष्ण ने उनके मन को प्रेम द्वारा लुभाया फिर निष्ठुर बनकर मथुरा जा बसे। प्रेम की आड़ लेकर उन्होंने गोपियों

के साथ धोखा किया है इसलिए गोपियाँ कृष्ण को चोर कहती हैं।

प्रश्न–'मन माने की बात' कथन से गोपियों का क्या अभिप्राय है?

उत्तर–गोपियों का अभिप्राय है कि जिसका मन जिससे लगा है उसे वही सुहाता है। चकोर शीतल कपूर को छोड़कर अंगारे ही खाता है। गोपियाँ कहती हैं उद्धव आपको ज्ञान सुहाता है तो हमें कृष्ण से प्रेम करना अच्छा लगता है।

तुलसीदास

प्रश्न–परशुराम के गुरू कौन थे

उत्तर–शिवजी

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न.–'**एक दास तुम्हारा**' का क्या भाव है ?

उत्तर.–का भाव है कि आपके (परशुराम) पूर्वज ने जिसकी छाती में एक लात मारी थी वही एक दास (राम)।

प्रश्न.–'**बहु धनु तोरे लरिकाई**' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–परशुराम ने सभी क्षत्रियों के धनुष एकत्रित कर लिये थे इसलिए शेषनाग पर वजन बढ गया,पृथ्वी ने माँ का रूप धारण किया और शेषनाग ने बालक का और परशुराम के आश्रम में रहे। बालक ने सभी धनुषों को तोड़ डाले।

प्रश्न.–लक्ष्मण नृपद्रोही किसे कहा है ?

उत्तर–लक्ष्मण ने परशुराम को नृपद्रोही कहा है।

प्रश्न–लक्ष्मण किसके अवतार थे ?

उत्तर–शेषनाग के अवतार थे।

Choosing Success

प्रश्न–लक्ष्मण के अनुसार सूर्यवंशी किस पर वार नहीं करते हैं ?

उत्तर–लक्ष्मण के अनुसार सूर्यवंशी कभी भी देवता ब्राह्मण,गाय व भक्त पर वीरता नहीं दिखाते।

प्रश्न–लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या–क्या विशेषता बताई ?

उत्तर–लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा युद्धभूमि में वीरता दिखाता है। वह अपनी वीरता का परिचय अपने कार्यों के माध्यम से देता है। वे कायर होते हैं जो रणभूमि में शत्रु को सम्मुख पाकर प्रलाप करते हैं।

प्रश्न. 'अयमय खाँड न ऊखमय' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–परशुराम जिस लक्ष्मण को आसानी से कटने वाला समझ रहे हैं, वह सामान्य बालक न होकर परम पराक्रमी वीर है। वह तलवार के सामान प्रखर तथा दुर्धर्ष है। अतः लक्ष्मण से टक्कर लना मुँह की खाना है।

सेनापति

प्रश्न–सेनापति का ऋतु वर्णन हिंदी साहित्य में अनूठा क्यों है

उत्तर–हिंदी कवियों में सेनापति अपने प्रकृति चित्रण के लिए प्रसिद्ध हैं। रीतिकालीन अधिकांश कवियों ने शृंगार प्रधान रचनाऐं रची हैं। सेनापति ने विस्तार से प्रकृति वर्णन भी किया। सेनपति के प्रकृति वर्णन की निम्नलिखित विशेषताऐं हैं–

1. प्रकृति वर्णन के दो स्वरूप रहे हैं–उद्दीपन तथा आलंबन। उद्दीपन में प्रकृति केवल भावों को उत्तेजित करने वाली दिखाई जाती है। आलंबन प्रधान रूप में प्रकृति को ही कविता का विषय बनाया जाता है। उन्होंने प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण किया।

2. सेनापति ने सभी ऋतुओं का विविधतापूर्ण चित्रण किया है। सभी ऋतुओं का विस्तार और

सजीवता के साथ वर्णन हुआ है।

3. प्रकृति का सूक्ष्म अंकन :–

इस वर्णन में सेनापति ने सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है।

4. आलंकारिक व शब्द चित्रात्मक शैली :–

सेनापति ने वसंत, ग्रीष्म और वर्षा का श्लेष अलंकार पर आधारित संयुक्त वर्णन तथा वर्षा और शीत का वर्णन सम्मिलत है।

प्रश्न–सेनापति ने वसंत ऋतु को किस रूप मे चित्रित किया है?

BY SN SIR-9828932858

उत्तर–वसंत को राजा के रूप में चित्रित किया है।

प्रश्न–सेनापति ने शीत ऋतु को किस रूप मे चित्रित किया है?

उत्तर–शीत ऋतु को सेनापति का रूप दिया है।

देव

प्रश्न–'जै जग मंदिर दीपक सुंदर' से कवि का क्या तात्पर्य है?

अथवा

देव ने जग मंदिर दीपक किसे और क्यों कहा है?

उत्तर– कवि ने श्रीकृष्ण को जग मंदिर दीपक कहा है। जैसे जलता हुआ दीपक मंदिर को प्रकाशित करता है उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी अपने दिव्य सौंदर्य और शुभ कर्मों से सारे जग को प्रकाशित करने वाले हैं। कवि इसी कारण उन्हें जग मंदिर दीपक कहकर जय जयकार करता है।

प्रश्न–देव ने ब्रजदूलह किसे और क्यों कहा है?

Choosing Success

उत्तर– देव ने ब्रजदूलह कृष्ण को कहा है क्योंकि कृष्ण सभी ब्रजवासियों को के स्नेह और सम्मान के प्रात्र रहे। विशेषकर राधा और गोपियां के प्रेम पात्र थे। उनकी वेशभूषारूप माधुरी से सब आकृष्ट रहते थे। इसी कारण कवि ने श्रीकृष्ण को ब्रज का दूल्हा कहा है।

प्रश्न– "झहरि झहरि........ह्वै दृगन में।" कवित्त के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

"सोय गये भाग मेरे जानि वा जगन में।" इस पंक्ति में नायिका की जो मनःस्थिति व्यक्त हुई है, उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस कवित्त में देव ने नायिका द्वारा देखे गये सपने का वर्णन है। नायिका ने सपने में प्रिय कृष्ण के दर्शन किये हैं। वर्षा ऋतु का मनोरम वातावरण है। बादल छा रहे हैं। रिमझिम बूँदें बरस रही हैं। इसी समय प्रिय कृष्ण आ पहुंचते हैं और साथ–साथ झूलने के लिए चलने का प्रस्ताव करते हैं। यह देख नायिका का मन फूला नहीं समाता है।

नायिका जैसे ही प्रिय कृष्ण के साथ चलने को उठती है कि नींद टूट जाती है। सपना, सपना ही रह जाता है। न वहाँ घन है न घनश्याम। नायिका अपने भाग्य को कोसने लगती है। उसका मिलन वियोग में बदल जाता है।

राजिया

प्रश्न–हिम्मत किम्मत होय...................राजिया। इस दोहे का भाव लिखिए। दोहे के माध्यम से मनुष्य के किस गुण की ओर संकेत किया गया है।

उत्तर– "मनुष्य को हिम्मती व साहसी होना चाहिए।"

हिम्मत रखने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं का डटकर मुकाबला कर सकता है। वह हिम्मत से अपना तथा अपने परिवार व समाज का हित साधन कर सकता है। शक्तिशाली व्यक्ति को ही सर्वत्र विजय मिलती है। समाज में साहसी को ही लोकनायक की तरह सम्मान प्रदान करते हैं। हिम्मत रखने से ही शेर मृगराज कहलाता है।

साहस व शक्ति से रहित व्यक्ति को कायर व दुर्बल मानते हैं। जिनमें हिम्मत नहीं होती उनका संसार में रद्दी कागज के समान उपेक्षा व अनादर हुआ करता है। सेना में, व्यापार में, प्रतियोगी परीक्षाओं में, यशस्वी बनने में साहस की बड़ी भूमिका हुआ करती है। चुनौती को देखकर घबराने वालों को कभी सफलता नहीं मिलती।

BY SN SIR-9828932858

इस सोरठे में कवि ने मनुष्य के साहसी, पराक्रमी एवं बलशाली होने की ओर संकेत किया हैं

प्रश्न–"अस्वाभाविक मित्रता के घातक परिणाम होते हैं।" राजिया रा सोरठा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– दो व्यक्तियों के बीच मित्रता तभी निभ सकती है जबकि वह दोनों के हित में और स्वाभाविक हो। यदि मित्रता स्वार्थ पर आधारित होगी और असमान व्यवहार वाले व्यक्तियों के बीच होगी तो वह अधिक दिन नहीं निभ पायेगी। <u>बिल्ली के साथ चूहे द्वारा मित्रता किया जाता अस्वाभाविक है। क्योंकि वह शिकारी व शिकार की मित्रता है</u>।चूहे के लिए वह मित्रता घातक हो सकती है।

मूसा नै मंजार, हित कर बैठा हेकण।
सह जाणै संसार, रस न रहसी राजिया।

प्रश्न–"जन्मजात प्रवृतियों में बदलाव असंभव है।" राजिया रा सोरठा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– हर प्राणी जन्म के साथ ही एक विशेष प्रकार का स्वभावऔर एक प्राकृतिक गुण लेकर आता है। इसे बदल पाना संभव नहीं होता है। कवि ने आकड़े का उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि आकड़े की जड़ों को चाहे दूध से सींचा जाए तो भी वह अपनी कड़वाहट नहीं त्यागता है क्योंकि व उसकी जन्मजात विशेषता है। इसी प्रकार ईर्ष्यालु व द्वेषी व्यक्ति के व्यवहार को बदल पाना संभव नहीं है–

"पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये।
उर कड़वाई आक, रंच न मुकै राजिया।"

Choosing Success

जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 1. ' प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– सूर्य के उदय होने पर ही कमलिनी खिलाना व उसका विकास होता है। उसी प्रकार समस्त प्रकृति की रक्षा व विकास ईश्वर के द्वारा होता है। अतएव इस प्रकृति रूपी कमलिनी का विकास करने वाला ईश्वर रूपी सूर्य ही है। ईश्वर की ही सृजन क्षमता से प्रकृति का विकास एवं प्रसार होता है

प्रश्न 2. प्रभो कविता का मूल भाव/सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

प्रभो! कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

प्रभो! कविता के अनुसार प्रकृति के सौंदर्य को प्रभावित करने वाला ईश्वर ही है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

प्रभो! कविता में कवि ने ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, दृढ़ विश्वास तथा श्रद्धा भावना को व्यक्त किया है। स्पष्ट कीजिए।

BY SN SIR-9828932858

उत्तर– प्रभो! कविता में कवि ने ईश्वर की स्तुति करते हुए उसे सर्व व्यापक, सुन्दर व शक्तिशाली बताया है–

1. सर्वव्यापकता

– प्रसाद ईश्वर की स्तुति करते हुए कहते हैं कि चंद्रमा की किरणों से ईश्वर की दिव्य ज्योति का पता चलता है।

– ईश्वर अनादि है उसकी माया असीम है।

– वह इस संसार लीला से ज्ञात हो जाता है।

– ईश्वर की सर्वव्यापकता का प्रसार सागर में दिखाई देता है। लहरें उसकी स्तुति गान करती हैं।

2. ईश्वर सृष्टि के पालक हैं

– इस प्रकृति रूप कमलिनी को विकसित करने वाला ईश्वर ही है।

– इस संसार रूपी उपवन का माली भी ईश्वर ही है।

3. ईश्वर दया के सागर हैं–

– जब ईश्वर की दया भक्तों पर हो जाती है तो समस्त मनोरथ पूरे हो जाते हैं। इसी से मेरी सभी इच्छाएं पूर्ण होनी की आशा हो रही है।

Choosing Success

निराला

प्रश्न–फेरूँगा निद्रित कलियों पर हाथ' इस पंकित का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि कहता है कि मैं आलस्य में डूबे व्यक्तियों में उत्साह व नव जीवन का संचार करूँगा।

प्रश्न–'द्वार दिखा दूँगा अनन्त' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– अनंत ईश्वर का मार्ग दिखा दूँगा

1. अभी न होगा मेरा अंत कविता का मूल भाव/उद्देश्य/प्रतिपाद्य/संदेश/भाव सौंदर्य लिखिए।

अथवा

उत्तर–इस कविता में आशा व जिजीविषा के साथ लोकहित का संदेश दिया है–

1. कवि युवावस्था के उत्साह को प्रकट करते हुए कहता है कि मैं भी जीवन जीना चाहता हूँ और मेरा उत्साह अभी कम नहीं होगा– "अभी न होगा मेरा अंत।"

2. कवि जीवन में हाथ पर हाथ रखकर बैठने की बजाय कर्म सौंदर्य से दूसरों का भला करना चाहता है–

"मैं ही अपना स्पप्न मृदुल कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर हाथ

प्रश्न–. 'मातृ–वंदना' कविता में कवि ने माँ शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

उत्तर– माँ भारती/भारत माता के लिए।

प्रश्न–मातृ–वंदना कविता का केंद्रीय भाव/मूलभाव अपने शब्दें में लिखिए?

अथवा

मातृ–वंदना कविता में निराला जी के हृदय की देशभक्ति की भावना का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। स्पष्ट कीजिए।

BY SN SIR-9828932858

उत्तर–

1. एक मनुष्य के रूप में कवि के जितने भी स्वार्थ हो सकते हैं उन सबको वह माँ भारती के चरणों में समर्पित करने को प्रस्तुत है। उसने परिश्रम करके जो सत्कर्मों का फल या लाभ प्राप्त किया है उनको भी कवि भारत माता पर न्यौछावर करने का संकल्प लेता है। वह चाहता है कि भारत माता की आँसू से भरी मूर्ति सदा उसे उसकी सेवा की प्रेरणा देती रहे।

""नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ।"

2. कवि जीवन–पथ के सभी विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ माँ की सेवा में अपना बलिदान कर उसे हर दुख से उसे मुक्त करना चाहता है।

"तेरे चरणों पर देकर बलि
सकल श्रेय संचित फल।"

Choosing Success

नागार्जुन

प्रश्न–वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति में कौन–कौन से बदलाव आये ?

उत्तर– आकाश में बादल छा गये हैं वर्षा रानी पायल छमका रही है। किसान के मुख पर मुस्कान थिरकने लगी है। झिंगुरों की शहनाई बजने लगी है। मोर नाचते हुए पिउ पिउ करने लगे हैं। दूब की नशों में हरियाली का संचार हो गया है। वर्षा का राज्य आते ही गर्मी आपना सारा सामान समेटकर चलती बनी।

प्रश्न–हिम गिरि की चोटियों को कनक शिखर क्यों कहा गया है?

उत्तर–हिम गिरि की चोटियों को कनक शिखर इसलिए कहा गया है क्योंकिउषा की लाली के कारण सोने के समान पीली दिखाई दे रही थी।

प्रश्न–'डर था प्रतिपल' उषा की लाली कविता के आधार पर बताईये कि कवि को किस बात का डर था?

उत्तर–कवि की उषा की लाली का जादुई दृश्य अपलक देख रहा था इसलिए उसे प्रतिपल यह डर था कि कहीं उषा की जादुई आभा कहीं बिखर न जाये।

ऋतुराज

प्रश्न– **लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।** इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए/माँ ने ऐसा क्यों कहा?/माँ द्वारा दी गई यह सीख आज के परिप्रेक्ष्य में कहाँ तक उचित है।

– लड़की स्वभाव से कोमल, सरल व भोली बनी रहे यह उसका स्वाभाविक गुण है। माँ उसे

शोषण से बचाना चाहती है कि उसे बनावटी गुड़िया समझकर उसका कोई शोषण न करे। इसलिए माँ कहती है कि लड़की के स्वभाविक गुणों के साथ इतना साहस भी रखना जिससे उसका कोई शोषण न कर सके।

प्रश्न– **आग रोटियाँ सेकने के लिए हैं जलने के लिए नहीं।** इस कथन में समाज की कौनसी कड़वी सच्चाई उजागर हुई है?

उत्तर– इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की उस स्थिति की ओर संकेत किया गया है जिसमें दहेज कम लाने के जुर्म में उसे जलाकर मार दिया जाता है या फिर वे दबाव में आकर आग में जलकर आत्महत्या कर लेती है।

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न– **पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की, कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।** इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– छोटी उम्र में बेटी का विवाह हो गया। वह जीवन में आने वाले दु:खों की गहराई को समझ नहीं पा रही थी। अभी उसके सामने केवल सुखों का धुँधला प्रकाश ही था अर्थात् उसके सामने सुख का काल्पनिक स्वरूप ही था और वह उसे जानने की कोशिश कर रही थी।

प्रश्न– कन्यादान कविता में अन्तिम पूँजी किसे और किसे कहा गया है?

अथवा

'कितना प्रामाणिक था उसका दुख' माँ के दुख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है।

उत्तर– अन्तिम पूँजी बेटी को कहा गया है। माँ बेटी को पालपोष कर बड़ा करती है। उसके प्रति उसका गहरा लगाव होता है। वह उसके सुख–दुख की सहभागी होती है। माँ उसी बेटी को विवाह के अवसर पर दान कर देती है तो उसके पास शेष कुछ नहीं बचता है इसलिए बेटी कोह अंतिम पूँजी कहा गया है। अत: माँ का दुख प्रामाणिक है।

प्रश्न–कन्यादान कविता में **माँ ने बेटी को क्या क्या सीख दी?**

अथवा

Choosing Success

उत्तर– अपने सौंदर्य पर कभी गर्व न करना अर्थात् उसकी प्रशंसा पर मत रीझना।

– आग का सदुपयोग करना, उसे आत्महत्या का साधन मत बनाना।

– वस्त्र और आभूषणोंह से भ्रमित मत होना।

– अपनी सरलता, कोमलता और भोलेपन को इस तरह प्रकट न करना कि ससुराल वाले उसका गलत ढंग से फायदा उठाएँ।

भारतेंदु

प्रश्न–"कीट क्रिटिक काटकर आधी से अधिक निगल जायेंगे।" भारतेंदु जी के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर–अपना नाम संसार में अमर करने व यश पाने के लिए भारतेंदु जी ने पुस्तक लेखन का विचार किया। यह विचार आते ही लेखक सोचने लगा कि पुस्तक प्रकाशित होते ही आलोचक कीड़े के समान उसे काट–छाँटकर आधी से अधिक नष्ट कर देंगे अर्थात् आलोचना करने वाले पुस्तक में कई कमियाँ निकालेंगे। इससे पुस्तक अलोकप्रिय हो जायेगी।

प्रश्न–"जब तक औषधि नहीं देते केवल उसी समय तक प्राणी के संसारी विथा लगी रहती है।" इस कथन में लेखक ने किस शैली का प्रयोग किया है और इसका क्या तात्पर्य है?

उत्तर–इस वाक्य में लेखक ने हास्य व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है। इसमें अकुशल चिकित्सकों पर

व्यंग्य किया है। इसमें बताया है कि अकुशल चिकित्सक जैसे ही रोगी को दवा देते हैं उसका प्राणान्त हो जाता है। जब तक वे उसे दवा नहीं देते तब तक ही उसे पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

प्रश्न–सप्रमाण सिद्ध कीजिए कि भारतेंदु जी ने इस निबंध में तत्कालीन समाज का चित्र व्यंग्य के माध्यम से उपस्थित किया है?

उत्तर **इस निबंध में भारतेंदु जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त धर्मान्धता, स्वार्थपरकता, पाखंड एवं शिक्षा के गिरते स्तर पर व्यंग्य किया है।**

BY SN SIR-9828932858

1. उस समय धर्म में आस्था की बजाय ढोंग अधिक था। वे अपने नाम को बनाये रखने व यश प्राप्त करने की इच्छा सब में थी। इसलिए वे मंदिर धर्मशाला आदि बनवाते थे लेकिन अपने आचरण में सुधार नहीं करते थे।

2. समाज सेवा के नाम पर चंदा माग कर उससे अपना स्वार्थ पूरा करते थे। चंदे के धन से अपना हित साधन करने वाले समाज सेवी नहीं घोर स्वार्थी होते हैं। लेखक ने मित्रों से धन लेकर पाठशाला बनवाई फिर भी लेखक के पास बहुत सा धन बच गया था।

3. उस समय भारत में अंग्रेजों की नीतियाँ अच्छी नहीं थी। शासक अन्यायपूर्ण आचरण करते थे। लेखक कहता है अंग्रेजों का शासन रहा तो मंदिरों की तरफ कोई देखेगा भी नहीं।

4. शिक्षा की दुरवस्था (स्वार्थी संचालक व अयोग्य शिक्षक)

भारतेंदु जी ने पाठशाला के जिन शिक्षकों के नाम गिनाये हैं उनमें भी उस समय के समाज में प्रचलित शिक्षा की बुरी दशा का बोध होता है। पंडितों में ज्ञान की कमी थी परंतु वे स्वयं को महाज्ञानी दिखाने की चेष्टा करते थे। आम जनता उनके बहकावे में आ जाती थी।

प्रश्न–तत्कालीन समाज में स्कूल संचालक स्वार्थी व शिक्षक अयोग्य थे। एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– मित्रों से चंदा माँगकर पाठशाला बनवाना और धन बचाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करना समाज सेवा नहीं है। विद्यालय मे नियुक्त शिक्षक अयोग्य थे। उनकी अयोग्यता से शिक्षा की बुरी दशा का बोध होता है–

1. महामुनि मुग्धमणि शास्त्री (तर्क वाचस्पति, प्रथम अध्यापक)

इनको सतयुग के अंत में इंद्र अपनी पाठशाला के लिए ढूँढते रह गये थे। इनके थोड़े ही परिश्रम से पंडित मूर्ख व मूर्ख पंडित बन जायेंगे।

2. पाखंड प्रिय धर्माधिकारी (अध्यापक धर्मशास्त्र)

सभी स्त्री पुरुषों को इन्होंने मोह रखा था। दृष्टि बचाकर भोग लगाया करते थे। एक कार्तिक मास भी इनको सुन लिया तो सभी नवीन धर्मों पर पानी फेर देंगे।

3. पं. प्राणानतकप्रसाद (वैयाकरण अध्यापक वैद्यकशास्त्र)

ये चिकित्सा में ऐसे कुशल हैं कि चिता पर चढते चढ़ते रोगी इनके उपकार का गुण नहीं भूलता। इनकी दवा सेवन से कितना भी रोग से पीड़ित क्यों न हो, क्षण भर में स्वर्ग के सुख को प्राप्त हो जाता है।

4. लुप्तलोचन ज्योतिषाभरण (अध्यापक ज्योतिष शास्त्र)

बड़े उदंड थे। इनको कुछ दिखता नहीं फिर भी आकाश में नवीन तारे खोज चुके

हैं।। 'मामिस्र मकराला उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है।

5. पंडित शील दावानल (अध्यापक नीतिशास्त्र और आत्मविद्य)

ये बाल ब्रह्मचारी हैं। वेणु, बाणासुर, रावण, दुर्योधन, शिशुपाल, कंस आदि इनके शिष्य रहे हैं। इनकी शिष्य परंपरा बता रही है कि ये कितने नीतिवान अध्यापक हैं।

प्रेमचंद

प्रश्न–"उसके अन्दर प्रकाश है और बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल–बल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।" प्रेमचंद के इस कथन को समझाइए।

BY SN SIR-9828932858

उत्तर–हामिद के मन में आशा और विश्वास है कि उसके माता–पिता जब आयेंगे तो उसके सारे दुख समाप्त हो जायेंगे। वे इतना धन लायेंगे कि वह अपने सारे अरमान पूरे कर लेगा। आशा में बड़ी शक्ति होती है उसके सहारे मनुष्य बड़ी से बड़ी मुसीबत का सामना कर लेता है। हामिद का मन भी आशा और आनंद से भरा हुआ है। उसके मन की आशा और प्रकाश के कारण निराशा और विपत्ति वहाँ ठहर नहीं सकती।

प्रश्न–"हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना, बालिका अमीना बन गई।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–हामिद मेले से खिलौने न खरीद कर अपनी बूढ़ी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदकर लाता है ताकि उसकी अँगुलियाँ न जलें। चिमटा देखकर अमीना की आँखों में हामिद के प्रति स्नेह व उसके त्याग को देखकर आँसू बहने लगे। छोटे से **हामिद ने अपनी उम्र से अधिक समझदारी का काम किया था। यह देखकर अमिना बालिका की तरह रो रही थी।**इस प्रकार बालक हामिद बूढ़ा हामिद और बुढ़िया अमीना बालिका अमीना की तरह व्यवहार कर रहे थे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न–क्या प्राकृत भाषा बोलना स्त्रीयों के अनपढ़ होने का प्रमाण है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्राकृत भाषा बोलना स्त्रियों के अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है क्योंकि उस काल में कुछ लोग ही संस्कृत बोल पाते थे। प्राकृत उस काल की बोलचाल की भाषा थी। यदि प्राकृत उस काल की बोलचाल की भाषा न होती तो बौद्धों व जैनों के हजारों ग्रंथ प्राकृत में नहीं लिखे जाते। यदि प्राकृत बोलने बाले अनपढ़ और गंवार थे तो हिंदी के प्रसिद्ध अखबार संपादकों को भी अनपढ़ कहा जा सकता है। नाट्यशास्त्र के नियम बनाते समय संस्कृत बोलने वालों की भाषा संस्कृत और संस्कृत न बोल पाने वालों की भाषा प्राकृत रखी गई।

'लक्ष्मीनारायण रंगा'

प्रश्न– 'अमर शहीद' एकांकी में निहित संदेश/प्रेरणा/प्रतिपाद्य/उद्देश्य लिखिए।

जैसलमेर राज्य के स्वेच्छाचारी शासन, सामन्तशाही और अमानवीय निरंकुश व्यवस्था के खिलाफ सागरमल गोपा ने जो आवाज उठाई वह व्यर्थ नहीं गयी जेल में ही भयानक शारीरिक यन्त्रणाओं के बाद शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़ककर उसे जीवित जला दिया गया। पर उसका यह बलिदान राजस्थान के जन–जागरण के लिए बड़ा प्रेरणादायी रहा।

'अमर शहीद' एकांकी राजस्थान के स्वतंत्रता–सेनानी सागरमल गोपा के अविस्मरणीय बलिदान की गाथा है। इस एकांकी में सागरमल के निर्भीकतापूर्ण और देशभक्ति से ओतप्रोत उद्गार, देशवासियों को सदैव प्रेरणाप्रद बने रहेंगे। एकांकी देश के युवा वर्ग को अनेक हृदयस्पर्शी संदेश

देता है।

1.अन्याय और दमन के विरुद्ध संघर्ष का संदेश।

2. दृढ़ आत्मविश्वास और त्याग का संदेश।

3. निर्भीकता और अडिग सहन–शक्ति का संदेश।

इस प्रकार इस एकांकी द्वारा, सागरमल गोपा के अद्वितीय चरित्र के माध्यम से हर देश और काल के स्वतंत्रता प्रेमियों को त्याग और बलिदान का अमर संदेश दिया गया है।

प्रश्न–'सागरमल गोपा का चरित्र–चित्रण कीजिए।

BY SN SIR-9828932858

1 अग्रगण्य क्रान्तिकारी देशभक्त–

जैसलमेर राज्य के स्वेच्छाचारी शासन, सामन्तशाही और अमानवीय निरंकुश व्यवस्था के खिलाफ सागरमल गोपा ने जो आवाज उठाई वह उनके अग्रगण्य क्रांतिकारी चरित्र की परिचायक है।

2 दृढ़ निश्चयी एवं अदम्य साहसी

घोर यातनाएँ दिये जाने पर भी वह माफीनामे पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं होते–

''मेरे मौत के पैगाम पर दस्तखत करा ले गुमानसिंह, पर माफीनामे पर जीते जी दस्तखत नहीं करूँगा।''

3 बलिदानी–

'अमर शहीद' एकांकी राजस्थान के स्वतंत्रता–सेनानी सागरमल गोपा के अविस्मरणीय बलिदान की गाथा है–

''स्वतंत्रता का कमल शहीदों के रक्त सरोवर में ही उगता बढ़ता है।''

4 स्वाभिमानी–

सागर को जब जेलर उनकी स्वतंत्रता के लिए कहते है तो वह कहता है–

''स्वतंत्रता के दीवानों को सहानुभूति की भीख नहीं चाहिए।''

5 अडिग धैर्यशाली–

सागरमल को अपने संघर्ष की सफलता पर दृढ़ विश्वास है–

''तो वह मशाल हम किसी और के हाथों सौंप कर मौत की गोद में सिर रखकर सो जायेंगे।''

6 निष्काम कर्मयोगी–

गोपा जी ने अपना और अपने पूरे परिवार का भविष्य देश की स्वतंत्रता के लिए दाँव पर लगा दिया। वह बिना किसी फल की चिन्ता किये अपने आपको नींव के पत्थर की तरह, एक बीज की तरह उत्सर्ग करने को प्रस्तुत है–

''यज्ञ में आहुति देने वाला यह नहीं देखता जेलर साहब कि उसकी आहुति से कौनसी लपट उठती है ? उठती है भी या नहीं।''

7 निडर–

गोपा जी की आवाज को गुमान सिंह की क्रूरता तनिक भी नहीं दबा पाती है। उनके संवादों में निर्भीकता का अदम्य स्वर है जो अंगों में मिर्चें भरे जाने और जीवित जलाये जाने पर भी मन्द नहीं होता।

प्रश्न– ''स्वतंत्रता का कमल शहीदों के रक्त सरोवर में ही उगता बढ़ता है।'' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजए।

इस कथन का आशय है कि जब तक शहीद अपने देश की आजादी के लिये रक्त नहीं बहाते, तब तक आजादी नहीं मिल पाती। आजादी का कमल शहीदों के रक्त से ही खिलता है।

प्रश्न– ''स्वतंत्रता संग्राम भी इस भावना से लड़ा जा रहा है।'' स्वतंत्रता संग्राम किस भावना से लड़ा जा रहा है?

सागर का विचार कितना भावनात्मक है कि स्वतंत्रता संग्राम लड़ने वाले लोग अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश को आजादी दिला रहे थे, उसका सुख भोगने की उनको जरा भी अभिलाषा नहीं थी। इस कथन में सागरमल गोपा का कथन है कि ''आम का अमृत उसे नहीं मिलेगा, अगर भगीरथ गंगा लाया था तो वह अपने लिए नहीं अपनी पीढ़ियों की प्यास बुझाने के लिए लाया था। अतः स्वतंत्रता संग्राम इस भावना से लड़ा जा रहा है कि इससे आगे आने वाली पीढ़ियों को सुख मिलेगा।''

BY SN SIR-9828932858

मोहन राकेश

प्रश्न–मोहन राकेश ने सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि किसे कहा है?

उत्तर–कन्याकुमारी (तमिलनाडू) को।

प्रश्न–कन्याकुमारी में किन तीन सागरों का संगम होता है?

उत्तर–हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी। इसी संगम स्थल पर विवेकानंद ने समाधि लगाई थी।

प्रश्न–'पानी पर दूर–दूर तक सोना ही सोना ढुल आया।' आखिरी चट्टान पाठ के आधार पर पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–लेखक जिस आखिरी चट्टान पर खड़ा था वहाँ सूर्यास्त के समय पानी का रंग सोने जैसा पीला दिखाई दे रहा था। इसलिए लेखक ने कहा कि पानी पर दूर–दूर तक सोना ही सोना ढुल आया।

प्रश्न–"मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ, एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक"–लेखक मोहन राकेश के इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लेखक आखिरी चट्टान पर खड़ा होकर अपना अस्तित्व क्यों भूल गया?

उत्तर–लेखक मोहन राकेश जिस आखिरी चट्टान पर खड़ा था वह अरब सागर, बंगाल की खाड़ी व हिंद महासागर के संगम पर स्थित है। समुद्र के तीनों ओर फैले विस्तार को देखने में मग्न वह कुछ देर के लिए अपने अस्तित्व को भूल गया। वह उस दृश्य में खो गया और एक पर्यटक के रूप में अपनी उपस्थिति का उसे ध्यान ही नहीं रहा।

प्रश्न–लेखक मोहन राकेश को कन्याकुमारी के समुद्र तट का प्राकृतिक सौंदर्य अच्छा लगा था किंतु उससे भी अधिक उन्हें कनानोर में भूल से छुट गये लिखे हुए पन्ने प्रिय थे। **आखिरी चट्टान यात्रा संस्मरण** के आधार पर उपर्युक्त कथन पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–लेखक कन्याकुमारी में समुद्र में उठती लहरों तथा सूर्योदय–सूर्यास्त के मनोरम दृश्य बार–बार देखना चाहता था तथा वहाँ कुछ दिन और रुकना चाहता था परंतु उसके लिखे हुए

अस्सी–नब्बे पन्ने कनानोर में ही छूट गये थे। वह उनको पुनः प्राप्त करने के लिए बेचैन था। उसके मन में सवेरे जाने वाली बसों का टाइम टेबल घूम रहा था तो दूसरी ओर उसे कन्याकुमारी का प्राकृतिक सौंदर्य अपनी ओर खींच रहा था। उसको अपने लिखे पन्ने अधिक प्रिय थे तथा उनको पाने के लिए वह बेचैन था।

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न– ईर्ष्या की उत्पत्ति का कारण बताइए।

उत्तर– जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों से करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं और वह इस दंश पीड़ा को भोगता रहता है।

BY SN SIR-9828932858

''लेखक के घर के दाहिनी तरफ रहने वाले वकील जो अच्छा खाते–पीते हैं, सभा सोसाइटियों में भाग लेते हैं। बाल–बच्चों से भरा–पूरा परिवार, नौकर भी सुख देने वाले और पत्नी भी मृदुभाषिणी है। मगर वे सुखी नहीं है। उनकी बगल में रहने वाले बीमा एजेंट की वैभव वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को जो भगवान ने दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दिखता। वे इस चिंता में भुने जा रहे हैं कि काश, एजेंट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क–भड़क मेरी हुई होती।''

प्रश्न– ईर्ष्या के दुष्परिणाम लिखिए।

1 बिना उद्यम अधिक पाने की लालसा तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाने की चेष्टा :

ईर्ष्यालु व्यक्ति एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं उठाता बल्कि बराबर इस चिंता में निमग्न रहता है कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला। इसी कारण ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन–रात सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और वह अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानता है।

2 ईर्ष्या निन्दा को जन्म देती है(ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है)

जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक–एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं कि मानों विश्व कल्याण को छोड़कर उनका कोई ध्येय ही नहीं है। वे निंदा करने में समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहीं आगे होता।

3 ईर्ष्या हृदय को जलाती है तथा विकास को अवरुद्ध करती है :

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं वे बराबर इस फ्रिक में लगे रहते हैं कि कहाँ सुनने वाला मिले और अपने दिल का गुब्बार खोलने का मौका मिले।

ईर्ष्यालु व्यक्ति के इतिहास को समझने की कोशिश की जाए जबसे उन्होंने इस सुकर्म का प्रारम्भ किया है तो पता लगेगा की तब से वे पतन की राह पर अग्रसर हैं।

4 ईर्ष्या चिंता से भी बदतर होती है :

चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिंता ने पकड़ लिया उस बेचारे की जिंदगी ही खराब हो जाती है, किन्तु ईर्ष्या शायद चिंता से भी बदतर चीज हैं क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।

5 ईर्ष्या ग्रसित व्यक्ति चलती फिरती जहर की गठरी के समान होता है :

चिंता परवशता और दयनीय स्थिति में ही उभरती है। चिंता विशिष्ट परिस्थितियों में व्यक्ति में सक्रियता भरकर गुणों को उभार देती है। इस कारण चिंताग्रस्त व्यक्ति समाज की दया का पात्र होता है। ईर्ष्या सर्वथा एक विकृत मनोभाव है, जिससे दूसरे की श्रेष्ठता, महत्ता आदि देखकर जलन होती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति अपनी विकृति की विवशता से इतना विषैला हो जाता है कि मानों भयंकर विष की गठरी हो, जो विषैली गैस निकालकर समूचे वातावरण को विषाक्त करती रहती है। भला ऐसे व्यक्ति के प्रति समाज की क्या सहानुभूति हो सकती है।

BY SN SIR-9828932858

6 ईर्ष्या से सात्विक आनन्द में बाधा पड़ती है :

जब भी मनुष्य के हृदय में चिंता का उदय होता है, सामने का सुख उसे मंद्धिम–सा दिखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू न रह जाता है और फूल तो ऐसे लगते हैं, मानों वे देखने के योग्य ही नहीं।

7 ईर्ष्या तामसी (राक्षसी) आनन्द को जन्म देती है :

निंदा के बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और ईर्ष्यालु व्यक्ति का यह सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं राक्षस की हँसी होती है, और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है।

8 ईर्ष्या शरीफ लोगों की समस्या का कारण होती है :

प्रश्न– ईर्ष्या का लाभदायक और सकारात्मक पक्ष कौनसा है?

उत्तर–''प्रतिद्वंद्विता और रचनात्मक प्रेरणा का विकास''

ईर्ष्या का सम्बंध प्रतिद्वंद्विता से होता है क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में है क्योंकि प्रतिद्वंद्विता से व्यक्ति का विकास होता है। ईर्ष्या के अधीन रहकर हम अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी के समकक्ष बनना चाहते हैं किन्तु यह तभी सम्भव है जब ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती है वह रचनात्मक हो।

रसेल का मत :

''यदि आप संसार व्यापी सुयश चाहते हैं तो नेपोलियन से स्पर्द्धा करें। मगर यह याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से।''

प्रश्न– ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय लिखिए।

अथवा

ईर्ष्यालु लोगों से बचने के लिए नित्से का मत लिखिए।

उत्तर– ''बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है उसकी रचना और निर्माण सुयश से दूर रह कर किया जाता है''

इन ईर्ष्याग्रस्त लोगों से बचने का एक ही उपाय है कि इनकी उपेक्षा की जाय और इनसे दूर ही रहा जाय। जो चाहते हैं कि जीवन में कुछ महान् और चिरजीवी रचना प्रस्तुत करें उन्हें सुयश का लोभ त्यागकर एकान्त में साधना करनी होगी। ईर्ष्यालुओं के बीच रहकर कुछ भी सार्थक कर्म

किया जाना सम्भव नहीं। यश और कीर्ति की लालसा मनुष्य की रचनाधर्मिता को पथभ्रष्ट कर सकती है। अतः जो लोग समाज के सामने नये आदर्श और मानदण्ड प्रस्तुत करना चाहते हैं, उन्हें बाजारू समाज और यश की अभिलाषा से बचना होगा। उन्हें एकान्त में जाकर ही नवनिर्माण की साधना करनी होगी। एकांत वहीं है जहाँ ईर्ष्यालु रूपी बाजार की मक्खियाँ नहीं है।

प्रश्न– ईर्ष्या से बचने का उपाय लिखिए।

उत्तर– ''ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।''

BY SN SIR-9828932858

प्रश्न– ईर्ष्या के सम्बंध में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का विचार लिखिए।

उत्तर– प्रायः देखा जाता है कि लोग अकारण किसी व्यक्ति से ईर्ष्या करते हैं और अकारण ही उसकी निंदा करते हैं। वे उनकी भी निंदा करते हैं जिन्होंने उनका उपकार ही किया है और जिनमें कोई दुर्गुण नहीं है जिसके कारण वे उनकी निंदा का पात्र बन सके। यह अनुभव सम्भवतः ईश्वरचन्द्र को भी कभी हुआ होगा।

प्रश्न– ईर्ष्यालु लोगों के सम्बंध में नित्से का मत लिखिए।

1 ''ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं''

नित्से ईर्ष्यालु व्यक्तियों की बाजार की मक्खियों से तुलना करते हुए कहते हैं कि ये सामने प्रशंसा और पीछे निंदा किया करते है। अच्छे व्यक्ति प्रीति उदारता और अच्छा व्यवहार भी करें तो इनको लगता है कि हमारा अपकार किया जा रहा है। यदि निंदा का जवाब न देकर चुप रहते हैं तो उसे भी वे अहंकार समझते हैं। खुशी तो इन्हें तभी हो सकती है जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदार बन जायें। हम इनके दिमाग में बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकती और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

2 ''आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।''

ईर्ष्यालु लोग बड़े लोगों से उनके गुणों के लिए ईर्ष्या किया करते हैं। वे दुर्गुणों को माफ कर देंगे क्योंकि बड़ों के दुर्गुणों को माफ करने में भी वे अपनी शान समझते है जिस शान का स्वाद लेने के लिए ये तरस रहे होते हैं। दूसरों के महान गुणों के कारण कुछ लोगों में नकारात्मक सोच उत्पन्न हो जाती है जिसके चलते वे दूसरों से ईर्ष्या किया करते हैं।

महादेवी वर्मा

प्रश्न–गौरा के शारीरिक सौन्दर्य (बाह्य व्यक्तित्व) का वर्णन कीजिए।

उत्तर–1 प्रियदर्शन –

पुष्ट लचीले पैर भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी सुडौल गर्दन निकलते हुए छोटे–छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की अधखुली पखुड़ियों जैसे कान, लम्बी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूँछ सब कुछ साँचे में ढला हुआ सा था। मानो गाय को इटैलियन मार्बल में तराशकर उस पर ओप दी गई हो।

उसकी काली बिल्लौरी आंखों का तरल सौंदर्य तो दृष्टि को बांधकर स्थिर कर देता था। चौड़े उज्ज्वल माथे और लम्बे तथा सांचे में ढले हुए मुख पर आँखें बर्फ में नीले जल के कुण्डों के समान जमती थी।

BY SN SIR 9828932858

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

Choosing Success

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

Choosing Success

BY SN SIR-9828932858

Choosing
Success

BY SN SIR-9828932858

Choosing Success

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

Choosing Success

BY SN SIR-9828932858

BY SN SIR-9828932858

Choosing Success

This document was created with Win2PDF available at http://www.win2pdf.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.
This page will not be added after purchasing Win2PDF.